मानसरोदक-खंड / पद्य संख्या – 6

लागीं केलि करै मझ नीरा । हंस लजाइ बैठ ओहि तीरा ॥
पदमावति कौतुक कहँ राखी । तुम ससि होहु तराइन्ह साखी ॥
बाद मेलि कै खेल पसारा । हार देइ जो खेलत हारा ॥
सँवरिहि साँवरि, गोरिहि । आपनि लीन्ह सो जोरी ॥
बूझि खेल खेलहु एक साथा । हार न होइ पराए हाथा ॥
आजुहि खेल, बहुरि कित होई । खेल गए कित खेलै कोई ?॥
धनि सो खेल खेल सह पेमा । रउताई औ कूसल खेमा ? ॥

मुहमद बाजी पेम कै ज्यों भावै त्यों खेल ।
तिल फूलहि के सँग ज्यों होइ फुलायल तेल ॥6॥

अर्थ :

(इस पद में जायसी ने पद्मावती और उसकी सहेलियों की जल क्रीड़ा का चित्रण करते हुए इसे ईश्वरीय प्रेम की क्रीड़ा के रूप में अभिव्यंजित किया है.)

सभी सखियाँ पानी में बैठकर क्रीड़ा करने लगीं, उन्हें देखकर हँसभी शर्माकर किनारे आकर बैठ गये. पद्मावती इस खेल में काफी कौतुक (कौतुहल) महसूस कर रही थी. सखियों ने उससे कहा कि – हे सखी! तुम हमारे बीच चाँद हो. यानि कि तुम हम सबमें बड़ी हो. तुम यहाँ हमारे खेल की साक्षी बनो कि हममें कौन अच्छा खिलाड़ी है.

बाजी लगाकर खेल शुरू हुआ और यह शर्त हुई कि हारने वाला जीतने वाले को अपना हार देगा. सबने अपनी अपनी जोड़ियाँ बनाएँ. सांवली स्त्री सांवली के साथ और गोरी गोरी के साथ रही.

जायसी यहाँ आगे कहते हैं कि यह खेल समझ बूझकर खेलना. कहीं ऐसा न हो कि गले का हार किसी पराये का हो जाये. यह खेल सिर्फ आज का ही है, फिर दुबारा नहीं होगा. खेल बीत जाने पर (आज का समय बीत जाने पर) क्या कोई खेल खेल पायेगा? (यहाँ जायसी कहना चाह रहे हैं कि जीवन का यह खेल क्षणिक है, जीवन ही क्षणिक है. इसलिए जीवन के इस खेल को सतर्क होकर, ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखते हुए ही खेलना चाहिए). धन्य है वह व्यक्ति जो प्रेम के रस से इस खेल को

खेलता है – धोखे से नहीं. इस खेल की प्राप्ति होना और उसका आनंदित रूप में खेला जाना यह एक दुर्लभ क्षण है जो हर किसी के बस का नहीं है, इसलिए जिसने भी इसे प्रेम के साथ खेला वह व्यक्ति भाग्यशाली है.

आगे जायसी कहते हैं कि प्रेम की वाटिका में जिसे भी खेलना अच्छा लगे उसे जरूर खेलना चाहिए. प्रेम की फुलवारी में खेलने से, यानि प्रेम करने से व्यक्ति के ऊपर भी प्रेम का सुंदर रंग चढ़ता जाता है. जैसे फूलों के साथ रखने से तिल में भी सुगंध आ जाती है. इसी तरह ईश्वर भक्ति से जीवन आनंदमय बनता है.

शब्दार्थ :

साखी = सखी, बारी = बाजी, पसारा = शुरू हुआ, हारू = हार, हार = पराजय, रौताई = प्राप्ति, खेम = क्षेम/ भला/ सुख, जेउँ = ज्यों, फुलाएल = खुशबूदार